(क) क्या विगत तीन वर्षों के दौरान पूर्वोत्तर के किसी विद्रोही समूह और केन्द्र सरकार के बीच कोई शांति वार्ता हुई है; और

(ख) यदि हां, तो उसका परिणाम क्या निकला है?

**उत्तर**

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री **(श्री मुल्लापल्ली रामचन्द्रन)**

**(क) : जी, हां। उन आतंकवादी समूहों से वार्ता की जाती है, जो हिंसा का रास्ता छोड़ने और भारत के संविधान के ढांचे के भीतर अपनी मांगे रखने के इच्छुक होते हैं। ऐसे समूहों के ब्यौरे, जिन्होंने वर्तमान समय में सरकार के साथ वार्ता की है (पिछले तीन वर्षों में वार्ता करने वाले समूहों सहित) निम्नलिखित हैं:**

**असम**

**(i) यूनाइटेड लिबरेशन फ्रन्ट ऑफ असम (उल्फा),**

**(ii) दीमा हलाम दाओगाह (डी एच डी) और डी एच डी (जोएल गरलोसा),**

**(iii) नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट ऑफ बोडोलैंड/प्रोग्रेसिव (एन डी एफ बी-पी),**

**(iv) कारबी लोंगरी नॉर्थ कछार हिल्स लिबरेशन फ्रन्ट (के एल एन एल एफ) और**

**(v) यूनाइटेड पीपुल्स डेमोक्रेटिक सालिडैरिटी (यू पी डी एस)।**

**यूनाइटेड पीपुल्स डेमोक्रेटिक सालिडैरिटी (यू पी डी एस) के साथ समझौता ज्ञापन पर दिनांक 25.11.2011 को पहले ही हस्ताक्षर हो गए हैं।**

**मेघालय**

**(i) अचिक नेशनल वालंटियर काउंसिल (ए एन वी सी)**

**मणिपुर**

**(i) यूनाइटेड पीपुल्स फ्रन्ट (यू पी एफ), कूकी नेशनल ऑर्गनाइजेशन (के एन ओ) और कॉगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (के. सी. पी.)।**

**नागालैंड**

**(i) नेशनल सोसलिस्ट काउन्सिल ऑफ नागालैंड/इसाक मूइवाह (एन एस सी एन/आई एम)**

**(ख): चूंकि समूहों ने राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा में शामिल होने की इच्छा जाहिर की है, इसलिए सिविलयनों एवं सुरक्षा कार्मिकों के विरुद्ध इन समूहों की आतंकवादी गतिविधियों में काफी कमी आई है।**